6,000 मीटर गहराई तक जाने में सक्षम होगा सबमर्सिबल वाहन, 2023 में अंतरिक्ष मिशन भेजने के बाद भारत गहरे समुद्र में भी मानव मिशन भेजेगा

समुद्रयान अभियान के लिए तैयार हो जाएगा स्वदेशी 'मत्स्य 6000'

तैयारी

नई दिल्ली/ चेन्नई | एजेंसी/ हिब्यू

देश में निर्मित सबमर्सिबल वाहन 'मत्स्य 6000' 2024 में प्रस्तावित समुद्रयान अभियान के लिए तैयार हो जाएगा। चेन्नई स्थित राष्ट्रीय समुद्री प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईओटी) के शीर्ष अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी।

2023 में अंतरिक्ष में मानव मिशन भेजने के बाद 2024 में भारत गहरे समुद्र में भी मानव मिशन भेजेगा। समुद्र के अंदर छिपे खनिज भंडारों की खोज के लिए समुद्रयान से तीन वैज्ञानिकों को 5,000 मीटर गहरे समुद्र में भेजा जाएगा।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की डीप ओशियन मिशन परियोजना के तहत मत्स्य 6000 को एनआईओटी द्वारा विकसित किया जा रहा है। इसमें पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की प्रयोगशालाओं के अलावा इसरो भी काम कर रहा है। पिछले साल समुद्रयान को 500 मीटर की गहराई में शोध के लिए उतारा जा चुका है।

पिछले साल हुई थी अभियान की शुरुआत : आईआईटी मद्रास और एनआईओटी के तत्वावधान में आयोजित ओशियंस 2022 सम्मेलन में संस्थान के निदेशक जीए रामदास ने कहा, हम समुद्रयान अभियान के लिए एक सबमर्सिबल तैयार कर रहे हैं, जिसका नाम मत्स्य 6000 है। भगवान और सरकार चाहेंगे तो 2024 तक इसका निर्माण पूरा हो जाएगा। समुद्रयान के निर्माण पर 350 करोड़ रुपये की लागत आने का अनुमान है।

संसाधनों की खोज करना मकसद

समुद्रयान अभियान 2024 के तहत स्वदेशी सबमर्सिबल वाहन की सहायता से समुद्र के गर्भ में एक हजार से डेढ़ हजार मीटर की गहराई में संसाधनों की खोज की जाएगी। गहरे समुद्र की तलहटी में अपार खनिजों के भंडार छुपे होने की संभावना है, जो या तो धरती पर उपलब्ध नहीं हैं या फिर धीरे-धीरे खत्म हो रहे हैं।

तीन व्यक्तियों को एक साथ ले जाने में सक्षम

'मत्स्य 6000' तीन मानवों को समुद्र के भीतर छह हजार मीटर की गहराई तक ले जाने में सक्षम है। इसके 2.1 मीटर व्यास वाले टाइटेनियम मिश्रधातु से बने हिस्से में तीन व्यक्ति जा सकते हैं।

96 घंटे तक रह सकता है गहरे समुद्र में : यह वाहन एक बार में 12 घंटे तक काम कर सकता है। आपातकालीन स्थिति में 96 घंटे तक गहरे समुद्र में रह सकता है।